मासिक शिवरात्रि व्रत कथा PDF

प्राचीन काल की बात है कि चित्रभानु नाम का एक शिकारी था। उसने उसका शिकार कर उसे बेच दिया और अपने परिवार का रंग भर दिया। वह उसी शहर के एक साहूकार का कर्जदार था और आर्थिक तंगी के कारण वह अपना कर्ज समय पर नहीं चुका पा रहा था। जिससे साहूकार ने क्रोधित होकर शिकारी चित्रभानु को शिवमठ में बंदी बना लिया। संयोग से उसी दिन मासिक शिवरात्रि थी।

जिसके कारण शिव मंदिर में भजन और कीर्तन हो रहे थे और उस बंदी शिकारी चित्रभानु ने पूरी रात भगवान शिव के भजनों और कथाओं का आनंद लिया। सुबह साहूकार ने उसे अपने पास बुलाया और कर्ज चुकाने को कहा। शिकारी चित्रभानु ने कहा, हे सेठजी, मैं कल तक आपका कर्ज चुका दूंगा। उसकी बात सुनकर सेठजी उसे छोड़कर चले गए।

जिसके बाद शिकारी शिकार के लिए जंगल में चला गया, लेकिन बंदीगृह में रात भर भूखा-प्यासा रहने के कारण वह थक गया और व्याकुल हो गया। और इसी तरह वह शिकारी की तलाश में काफी दूर आ गया था और जब सूरज ढलने लगा तो उसने सोचा कि जंगल में रात बितानी पड़ेगी। ऊपर से कोई शिकार भी नहीं कर सकता था, जिसे बेचकर वह सेठजी का कर्ज चुका देता।

यह सोचकर वह एक तालाब के पास पहुंचा और खूब पानी पिया। जिसके बाद वह बेल के पेंड में चढ़ गया जो उसी तालाब के किनारे था। उसी बेलपत्र के पत्तों के नीचे शिवलिंग स्थापित किया जा रहा था, लेकिन शिकारी उसे देख नहीं पाया क्योंकि वह बिल्व पत्र से पूरी तरह ढका हुआ था। चित्रभानु वृक्ष में बैठने के लिए शिकारी ने बिल की डालियाँ और पत्ते तोड़कर नीचे गिरा दिए।

संयोग से वे सभी टहनियां और पत्ते भगवान शिवलिंग पर गिरते रहे। और शिकारी चित्रभानु रात से लेकर दिन भर भूखा-प्यासा रहा। और इसी तरह उनका मासिक शिवरात्रि का व्रत किया। कुछ समय बाद एक गर्भवती हिरनी उस तालाब में पानी पीने आई। और पानी पीने लगा। मृग को देखकर व्याध चित्रभानु ने अपने धनुष पर बाण चढ़ाया और जब वह उसे छोड़ने लगा तो गर्भवती हिरनी ने कहा।

तुम धनुष-बाण मत चलाओ क्योंकि इस समय मैं गर्भवती हूँ और तुम एक साथ दो प्राणियों को नहीं मार सकते। लेकिन मैं जल्द ही जन्म दूंगी, जिसके बाद मैं तुम्हारे पास आऊंगी,

pdfinbox.com

तब तुम मेरा शिकार कर सकते हो। उस मृग की बात सुनकर चित्रभानु ने अपना धनुष ढीला कर दिया। इसी बीच हिरण झाड़ियों में गुम हो गया।

ऐसे में जब शिकारी ने चढ़कर अपना धनुष ढीला किया तो उसी समय बिल्वपत्र के कुछ पत्ते शिवलिंग पर गिरे। इस प्रकार पहले पहर की पूजा भी शिकारी के हाथों ही हुई। कुछ देर बाद जब दूसरा हिरण झाड़ियों से निकला तो शिकारी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। चित्रभानु ने उस मृग का शिकार करने के लिए धनुष उठाया और बाण छोड़ने लगा, तब मृग बोला, हे शिकारी, मुझे मत मारो।

मैं अभी सीजन से बाहर आई हूं और अपने पति से अलग हो गई हूं। उसे खोजते-खोजते मैं यहां पहुंच गया। मेरे पति से मिलने के बाद तुम मेरा शिकार कर सकती हो। यह कहकर हिरण वहां चला गया। दो बार अपने शिकारी को खोने के बाद शिकारी चित्रभानु बहुत दुखी था। और चिंतित हो गया कि पर सेठजी का कर्जा कहां से चुकाऊंगा।

जब शिकारी ने दूसरे हिरण का शिकार करने के लिए अपना धनुष चढ़ाया तो कुछ बिल्वपत्र के पत्ते शिवलिंग पर गिरे। इस प्रकार दूसरे चरण का पूजन भी संपन्न हुआ। इस प्रकार आधी रात बीत गई और कुछ देर बाद एक हिरणी अपने बच्चों के साथ तालाब में पानी पीने आई। चित्रभानु ने तनिक भी विलम्ब न करते हुए धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाना और बाण छोड़ना प्रारम्भ कर दिया। इसी बीच हिरण ने कहा-

हे शिकारी अब मुझे मत मारो। अगर मैं मर गया तो मेरे बच्चे अनाथ हो जाएंगे। मैं इन बालकों को इनके पिता के पास छोड़ दूं, जिसके बाद तुम मेरा शिकार करना। उस मृग की बात सुनकर शिकारी चित्रभानु जोर-जोर से हंसने लगा और बोला कि मैं अपने सामने आए शिकार को कैसे छोड़ सकता हूं। मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ। क्योंकि दो बार मैंने अपना शिकारी खोया है, अब तीसरी बार नहीं।

हिरानी ने कहा, जिस तरह से आपको अपने बच्चों की चिंता है, उसी तरह मुझे अपने बच्चों की चिंता है, मैं उन्हें उनके पिता के पास छोड़कर वापस आ जाऊंगी, जिसके बाद आप मुझे एक शिकारी बना दें। मुझ पर विश्वास करो शिकारी राज। हिरणी की बात सुनकर शिकारी को दया आ गई और उसने उसे जाने दिया। ऐसे में तीसरे प्रहर की पूजा भी शिकारी के हाथों ही हुई थी।

कुछ देर बाद वहाँ एक मृग आया, जिसे देखकर चित्रभानु ने अपना धनुष-बाण उठाया और अपने शिकार के लिए उसे छोड़ने लगा। तो उस मृग ने विनम्रतापूर्वक कहा, हे शिकारी, यदि तुमने मेरी तीन पत्नियों और छोटे बच्चों को मार डाला है। इसलिए मुझे भी मार दो

nurinbox.com

क्योंकि उसके बिना इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है। यदि आपने उन्हें नहीं मारा है तो उन्हें जाने दें। क्योंकि मैं उन तीन हिरणों का पति हूं और वे मुझे ही ढूंढ रहे हैं। अगर मैं उन्हें नहीं ढूंढ पाया, तो वे सब मर जाएंगे।

मैं उन सब से मिलकर तुम्हारे पास आऊंगा जिसके बाद तुम मेरा शिकार कर सकते हो। उस मृग की बात सुनकर शिकारी को सारी रात का घटनाक्रम समझ में आ गया और उसने उस मृग को सारी बात बता दी। जैसे मेरी तीनों पत्नियां मन्नत मानकर चली गई हैं, वैसे ही वह लौट आएगी। क्योंकि तीनों अपनी बात के पक्के हैं। और अगर मैं मर गया तो तीनों अपने धर्म का पालन नहीं करेंगे।

मैं शीघ्र ही अपने पूरे परिवार के साथ आपके समक्ष उपस्थित होऊंगा। कृपया मुझे अभी जाने दें। शिकारी चित्रभानु ने उस हिरण को भी छोड़ दिया। और इस तरह अनजाने में ही उस शिकारी ने भगवान शिव की पूजा पूरी कर ली। जिसके बाद शिकारी का हृदय परिवर्तन हुआ और उसके मन में भक्ति की भावना उत्पन्न हुई।

कुछ समय बाद मृग अपने पूरे परिवार यानी तीनों हिरणों और बच्चों के साथ शिकारी के पास आ गया। और कहा कि हम अपने वचन के अनुसार यहां आए हैं, अब तुम हमारा शिकार कर सकते हो। जंगल के जानवरों की सच्ची भावना को देखकर शिकारी चित्रभानु का दिल पूरी तरह से पिघल गया। और उसी दिन से उसने शिकार करना छोड़ दिया।

दूसरे दिन सुबह ही उसने किसी और से उधार लेकर सेठजी का कर्ज़ चुका दिया और खुद मेहनत करने लगा। इस तरह उन्होंने अपने जीवन को अनमोल बनाया। जब शिकारी चित्रभानु की मृत्यु हो गई तो यमदूत उसे लेने आए लेकिन शिव के दूतों ने उन्हें भगा दिया और शिवलोक ले गए। इस तरह उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई।

pdfinbox.com